इस अंक में

प्रिय पाठकों,

वर्ष के दूसरे माह फरवरी ने समय के द्वार पर दस्तक दे दी है। इस बरस तो लगता है जैसे समय कुछ पहले ही बाग और बगियन में बसंत वगर चुका है। बासंती बयार अपने संग-संग उत्सव और आयोजन के सुनहरे क्षण भी हमारे लिए लाई है। फाल्गुन की पद-चापें भी देहरी लांघ चुकी हैं।

गुजरते माह की 26 तारीख ने इकसठवीं बार गणतंत्र की गरिमा से अभिभूत होने का अवसर हम सबको दिया। इसी के साथ, अपने-अपने क्षेत्रों में उत्कृष्ट सृजनात्मक और श्रेष्ठ उपलब्धियों के लिए प्रदेश से जुड़ी चार शख्सियतों ने पद्मश्री सम्मान हासिल कर प्रदेश के भाल पर गर्व की रोली को और अधिक सुर्ख किया है।

राजा भोज के राज्य-अभिषेक के एक हजार वर्ष पूरे होने के विलक्षण मौके पर स्मृति-आलेख 'तीन थे सरस्वती कंठा भरण' इस अंक की विशिष्टता है।

प्रदेश के साथ, पूरे देश ने पूरे गौर के साथ सुना जब मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान ने चुनाव सुधारों पर पूरी दृढ़ता के साथ अपनी बात लोगों के सामने रखी थी। मुख्यमंत्री की इस पहल पर प्रदेश के विभिन्न अंचलों के जनों का मत इस अंक की आवरण कथा है।

हॉकी की नर्सरी भोपाल में पिछले दिनों हॉकी फिर सुर्खियों में है। घोषणा के साथ चंद दिनों में उसका कार्य-रूप में परिणित होते देख यह आशा अंकुरित हो चुकी है कि हॉकी के स्वर्णिम दिन स्वर्णिम प्रदेश में ही लौटेंगे। इस मुद्दे पर एक आलेख।

इस अंक का एक और आकर्षण है– बहुआयामी कलाकार- रुद्रहांजी जो जन्मे थे कर्नाटक में लेकिन उनका कार्यक्षेत्र था- ग्वालियर। इस विलक्षण कलाकार के कला-कृतित्व पर इस अंक में रोशनी डाली जा रही है।

इस अंक में जबलपुर की वरिष्ठ लेखिका तोरनदेवी लली की आत्मकथा 'जीवन की पगडंडियाँ' का एक महत्वपूर्ण अंश भी प्रस्तुत है। 125वीं जयंती पर डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को और पुण्यतिथि पर सुभद्रा कुमारी चौहान को याद किया जा रहा है।

शिवरात्रि के अवसर पर भूमरा के शिव मंदिर की चर्चा के साथ ही और बहुत कुछ.... ।

संपादक